

Table of Contents

दिनचर्या	2
हृदय रोग (Heart Disease), मधुमेह (Diabete), उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure), उच्च रक्त-वसा (High Cholesterol)	2
ब्रेन मलेरिया, टाइफाईड, चिकुनगुनिया, डेंगू, स्वाइन फ्लू, इन्सेफेलाइटिस, माता व अन्य के बुखार	3
उच्च/निम्न रक्तचाप	3
मधुमेह (डायबिटीज)	4
सांप के काटने पर चिकित्सा	5
बिच्छू के काटने पर चिकित्सा	6
पागल कुत्ता काटने	6
चूना	7
गठिया की चिकित्सा	8
चोट लगने लेकिन खून न बहने पर	9
चोट लगने और खून बहने पर इसकी चिकित्सा	9
बहुत गंभीर चोट	9
CALENDULA OFFICINALIS (MOTHER TINCER)	10
NUX VOMICA	10
पीलिया	10
बवासीर, फिस्टूला या भगन्दर होने पर	10
नसों में जकड़न और पक्षाघात	11
कैसर	11

दिनचर्या

सम्पूर्ण सेहत बिना डाक्टर-एक सपना या हकीकत?

आज भारत में लगभग 80% लोग रोगी हैं, पर इन सभी बीमारियों के इलाज के लिए पर्याप्त चिकित्सक नहीं हैं। आज से 3000 वर्ष पूर्व महर्षि बागभट्ट द्वारा रचित अष्टांग हृदय के अनुसार, बीमार व्यक्ति ही अपना सबसे अच्छा चिकित्सक हो सकता है, बीमारियों से मुक्त रहने के लिए दैनिक आहार विहार द्वारा स्वस्थ रहने के सूत्रों के आधार पर राजीव दीक्षित ने निम्न सूत्र बनाए थे

1. रात को दाँत साफ करके सोये। सुबह उठ कर गुनगुना पानी बिना कुर्ला किए, बैठ कर, घूँट-घूँट (sip&sip) करके पीये। एक दो गिलास जितना आप सुविधा से पी सकें उतने से शुरुआत करके, धीरे धीरे बढ़ा कर सवा लिटर (1.1/4 स्जत) तक पीना है।
2. भोजनान्ते विषमवारी अर्थात् भोजन के अंत में पानी पीना विष पीने के समान है। इस लिए खाना खाने से आधा घंटा पहले और डेढ घंटा बाद तक पानी नहीं पीना। डेढ घंटे बाद पानी जरूर पीना। पानी के विकल्प में आप सुबह के भोजन के बाद मौसमी फलों का ताजा रस पी सकते हैं (डिब्बे वाला नहीं), दोपहर के भोजन के बाद छाछ और अगर आप हृदय रोगी नहीं हैं तो आप दही की लस्सी भी पी सकते हैं। शाम के भोजन के बाद गर्म दूध। यह आवश्यक है की इन चीजों का क्रम उलट-पुलट मत करें।
3. पानी जब भी पीये बैठ कर पीये और घूँट-घूँट कर पीये।
4. फ्रिज (रेफ्रीजरेटर) का पानी कभी न पीये। गर्मी के दिनों में मिट्टी के घड़े का पानी पी सकते हैं।
5. सुबह का भोजन सूर्योदय के दो से तीन घंटे के अंदर खा लेना चाहिए। आप अपने शहर में सूर्योदय का समय देख लें और फिर भोजन का समय निश्चित कर लें। सुबह का भोजन पेट भर कर खाएं। अपना मनपसंद खाना सुबह पेट भर कर खाएं।
6. दोपहर का भोजन सुबह के भोजन से एक तिहाई कम करके खाएं, जैसे सुबह अगर आप तीन रोटी खाते हैं तो दोपहर को दो खाएं। दोपहर का भोजन करने के तुरंत बाद बाईं करवट (Left Side) लेट जाएँ, चाहे तो नींद भी ले सकते हैं, मगर कम से कम 20 मिनट अधिक से अधिक 40 मिनट। 40 मिनट से ज्यादा नहीं।
7. इसके विपरीत शाम को भोजन के तुरंत बाद नहीं सोना। भोजन के बाद कम से कम 500 कदम जरूर सैर करें। संभव हो तो रात का खाना सूर्यास्त से पहले खा लें।
8. भोजन बनाने में फ्रिज, माइक्रोवेव ओवन, प्रेशर कूकर, तथा एल्युमिनियम के बर्तनों का प्रयोग न करें।
9. खाने में रिफाइन्ड तेल का इस्तेमाल न करें। आप जिस क्षेत्र में रहते हैं वहाँ जो तेल के बीज उगाये जाते हैं उसका शुद्ध तेल प्रयोग करें, जैसे यदि आपके क्षेत्र में सरसों ज्यादा होती है तो सरसों का तेल, मूँगफली होती है तो मूँगफली का तेल, नारियल है तो नारियल का तेल। तेल सीधे सीधे घानी से निकला हुआ होना चाहिए।
10. खाने में हमेशा सेंधा नमक का ही प्रयोग करना चाहिए, ना की आयोडिन युक्त नमक का। चीनी की जगह गुड, शक्कर, देसी खाण्ड या धागे वाली मिस्त्री का प्रयोग कर सकते है।
11. कोई भी नशा न करें, चाय, काफी, मांसाहार, मैदा, बेकरी उत्पादों का उपयोग नहीं करना चाहिए।
12. रात को सोने से पहले हल्दी वाला दूध दाँत साफ करने के बाद पीये।
13. सोने के समय सिर पूर्व दिशा की तरफ तथा संबंध बनाते समय सिर दक्षिण दिशा को तरफ करना चाहिए।

हृदय रोग (Heart Disease), मधुमेह (Diabete), उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure), उच्च रक्त-वसा (High Cholesterol)

इन बीमारियों के रोगियों के लिए कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ निम्नलिखित हैं रु-

1. खाने में रिफाइन्ड तेल का इस्तेमाल न करें। आप जिस क्षेत्र में रहते हैं वहाँ जो तेल के बीज उगाये जाते हैं उसका शुद्ध तेल प्रयोग करें, जैसे यदि आपके क्षेत्र में सरसों ज्यादा होती है तो सरसों का तेल, मूँगफली होती है तो मूँगफली का तेल, नारियल है तो नारियल का तेल। तेल सीधे सीधे घानी से निकला हुआ होना चाहिए।

सम्पूर्ण सेहत बिना डॉक्टर-एक सपना या हकीकत?

2. खाने में हमेशा सेंधा नमक का ही प्रयोग करना चाहिए, ना की आयोडिन युक्त नमक का।
3. देशी गाय का घी जो दही को मथ कर बनाया गया हो, इन बीमारी के रोगियों के लिए अमृत है।
4. खाने में छिलके वाली दालें, छिलके सहित सब्जियाँ, छिलके वाले चावल, छिलके सहित गेहूँ का आटा इस्तेमाल करें।
5. क्षारीय (Alkaline) वस्तुओं जैसे आंवला, अलोवेरा, गाजर, मूली, चोलाई, सरसों आदि का प्रयोग इन रोगों में अत्यंत लाभदायक है।
6. इन सभी जानकारीयों के इलावा दिनचर्या का पालन भी आवश्यक है।

ब्रेन मलेरिया, टाइफाइड, चिकुनगुनिया, डेंगू, स्वाइन फ्लू, इन्सेफेलाइटिस, माता व अन्य के बुखार

मित्रो बहुत सारे बुखार तेजी से भारत देश में फैल रहे हैं ।। करोड़ों की संख्या में लोग इससे प्रभावित हो रहे हैं। और लाखों लोग मर रहे हैं। हमेशा की तरह सरकार के हाथपर हाथ रखे तमशा देख रही है।

श्री राजीव दीक्षित जी ने गाँव-गाँव घूम-घूम कर आयुर्वेदिक दवा से लाखों लोगों को बचाया है।। और ये दवा बनानी कितनी आसान है।

1. 20 पत्ते तुलसी, नीम की गिलोई का सत् 5gm, सोंठ (सुखी अदरक) 10gm, 10 छोटी पीपर के टुकड़े, सब आपके घर में आसानी से उपलब्ध हो जाती है। सब एक जगह पर कूटने के बाद एक गिलास पानी में उबालकर काढ़ा बनाना है ठन्डा होने के बाद दिन में सुबह, दोपहर और श्याम तीन बार पीना चाहिए।

नीम गिलोई - इसका जूस डेंगू रोग में श्वेत रक्त कणिकाये, प्लेट-लेट्स कम होने पर तुरंत बढ़ाने में बहुत ज्यादा काम आता है।

2. एक और अच्छी दवा है, एक पेड़ होता है उसे हिंदी में हारसिंगार कहते हैं, संस्कृत में पर पारिजात कहते हैं, बंगला में शिउली कहते हैं, उस पेड़ पर छोटे छोटे सफेद फूल आते हैं, और फूल की डंडी नारंगी रंग की होती है, और उसमें खुशबू बहुत आती है, रात को फूल खिलते हैं और सुबह जमीन में गिर जाते हैं । इस पेड़ के पांच पत्ते तोड़ के पत्थर में पिस के चटनी बनाइये और एक ग्लास पानी में इतना गरम करो के पानी आधा हो जाये फिर इसको ठंडा करके रोज सुबह खाली पेट पियो तो बीस बीस साल पुराना गठिया का दर्द इससे ठीक हो जाता है । और यही पत्ते को पिस के गरम पानी में डाल के पियो तो बुखार ठीक कर देता है और जो बुखार किसी दवा से ठीक नहीं होता वो इससे ठीक होता है जैसे चिकनगुनिया का बुखार, डेंगू फीवर, Encephalitis, ब्रेन मलेरिया, ये सभी ठीक होते हैं ।

इनके प्रयोग से आप रोगी की जान बचा सकते हैं। मात्र इसकी 3 खुराक से राजीव भाई ने लाखों लोगों को बुखार से मरने से बचाया था।

अपना अनमोल जीवन और पैसा बचाइए ।

उच्च/निम्न रक्तचाप

उच्च रक्तचाप की बीमारी ठीक करने के लिए घर में उपलब्ध कुछ आयुर्वेदिक दवाईया है जो आप ले सकते हैं । जैसे एक बहुत अच्छी दवा आप के घर में है दालचीनी जो मसाले के रूप में उपयोग होता है वो आप पत्थर में पिस कर पावडर बनाके आधा चम्मच रोज सुबह खाली पेट गरम पानी के साथ खाइए या अगर थोड़ा खर्च कर सकते हैं तो दालचीनी को शहद के साथ लीजिये (आधा चम्मच शहद आधा चम्मच दालचीनी) गरम पानी के साथ, ये हाई BP के लिए बहुत अच्छी दवा है । और एक अच्छी दवा है जो आप ले सकते हैं पर दोनों में से कोई एक । दूसरी दवा है मेथी दाना, मेथी दाना आधा चम्मच लीजिये एक ग्लास गरम पानी में और रात को भिगो दीजिये, रात भर पड़ा रहने दीजिये पानी में और सुबह उठ कर पानी को पि लीजिये और मेथी दाने को चबा के खा लीजिये । ये बहुत जल्दी आपकी हाई BP कम कर देगा, देड से दो महीने में एकदम स्वाभाविक कर देगा ।

और एक तीसरी दवा है हाई BP के लिए वो है अर्जुन की छाल । अर्जुन एक वृक्ष होती है उसकी छाल को धुप में सुखा कर पत्थर में पिस के इसका पावडर बना लीजिये । आधा चम्मच पावडर, आधा ग्लास गरम पानी में मिलाकर उबाल ले, और खूब उबालने के बाद इसको चाय की तरह पि ले। ये हाई BP को ठीक करेगा, कोलेस्ट्रॉल को ठीक करेगा, ट्राईग्लिसराईड को ठीक करेगा, मोटापा कम करता है, हार्ट में अर्टेरिस में अगर कोई ब्लॉकेज है तो वो ब्लॉकेज को भी निकाल देता है ये अर्जुन की छाल । डॉक्टर अक्सर ये कहते

सम्पूर्ण सेहत बिना डॉक्टर-एक सपना या हकीकत?

है न की दिल कमजोर है आपकाय अगर दिल कमजोर है तो आप जरूर अर्जुन की छाल लीजिये हरदिन , दिल बहुत मजबूत हो जायेगा आपकाय आपका ESR ठीक होगा, ejection fraction भी ठीक हो जायेगा बहुत अच्छी दवा है ये अर्जुन की छाल ।

और एक अच्छी दवा है हमारे घर में वो है लौकी का रस। एक कप लौकी का रस रोज पीना सबेरे खाली पेट नास्ता करने से एक घंटे पहले या और इस लौकी की रस में पांच धनिया पत्ता, पांच पुदीना पत्ता, पांच तुलसी पत्ता मिलाके, तिन चार कलि मिर्च पिस के ये सब डाल के पीना .. ये बहुत अच्छा आपके BP ठीक करेगा और ये हृदय को भी बहुत व्यवस्थित कर देता है , कोलेस्ट्रॉल को ठीक रखेगा, डायबिटीज में भी काम आता है।

और एक मुफ्त की दवा है, बेल पत्र की पत्ते - ये उच्च रक्तचाप में बहुत काम आते हैं । पांच बेल पत्र ले कर पत्थर में पिस कर उसकी चटनी बनाइये अब इस चटनी को एक ग्लास पानी में डाल कर खूब गरम कर लीजिये , इतना गरम करिए के पानी आधा हो जाये , फिर उसको ठंडा करके पि लीजिये। ये सबसे जल्दी उच्च रक्तचाप को ठीक करता है और ये बेलपत्र आपके सुगर को भी सामान्य कर देगा । जिनको उच्च रक्तचाप और सुगर दोनों हैं उनके लिए बेल पत्र सबसे अच्छी दवा है।

और एक मुफ्त की दवा है हाई BP के लिए - देशी गाय की मूत्र पीये आधा कप रोज सुबह खाली पेट ये बहुत जल्दी हाई BP को ठीक कर देता है । और ये गोमूत्र बहुत अद्भूत है, ये हाई BP को भी ठीक करता है और लो टच को भी ठीक कर देता है - दोनों में काम आता है और यही गोमूत्र डायबिटीज को भी ठीक कर देता है , Arthritis, Gout (गठिया) दोनों ठीक होते हैं । अगर आप गोमूत्र लगातार पि रहे हैं तो दमा भी ठीक होता है अस्थमा भी ठीक होता है, Tuberculosis भी ठीक हो जाती है । इसमें दो सावधानिया ध्यान रखने की हैं के गाय सुद्धरूप से देशी हो और वो गर्भावस्था में न हो ।

निम्न रक्तचाप की बीमारी के लिए दवा : निम्न रक्तचाप की बीमारी के लिए सबसे अच्छी दवा है गुड । ये गुड पानी में मिलाके, नमक डालकर, नीबू का रस मिलाकर पि लो । एक ग्लास पानी में 25 ग्राम गुड, थोडा नमक नीबू का रस मिलाकर दिन में दो तिन बार पिने से लो BP सबसे जल्दी ठीक होगा ।

और एक अच्छी दवा है ..अगर आपके पास थोड़े पैसे हैं तो रोज अनार का रस पियो नमक डालकर इससे बहुत जल्दी लो टच ठीक हो जाती है, गन्ने का रस पीये नमक डालकर ये भी लो BP ठीक कर देता है, संतरे का रस नमक डाल के पियो ये भी लो टच ठीक कर देता है, अनन्नास का रस पीये नमक डाल कर ये भी लो BP ठीक कर देता है ।

लो BP के लिए और एक बढ़िया दवा है मिर्ची और मखखन मिलाकरे खाओ - ये लो BP की सबसे अच्छी दवा है ।

लो BP के लिए और एक बढ़िया दवा है दूध में घी मिलाके पियो , एक ग्लास देशी गाय का दूध और एक चम्मच देशी गाय की घी मिलाके रातको पिने से लो BP बहुत अछे से ठीक होगा ।

और एक अच्छी दवा है लो BP की और सबसे सस्ता भी वो है नमक का पानी पियो दिन में दो तिन बार , जो गरीब लोग हैं ये उनके लिए सबसे अच्छा है ।

मधुमेह (डायबिटीज)

आजकल मधुमेह की बीमारी आम बीमारी है। डायबिटीज भारत मे 5 करोड 70 लाख लोगोंको है और 3 करोड लोगों को हो जाएगी अगले कुछ सालों मे सरकार ये कह रही है । हर दो मिनट मे एक मौत हो रही है डायबिटीज से औरब्वउचसपबंजपवदे तो बहुत हो रहे हैं... किसी की किडनी खराब हो रही है, किसी का लीवर खराब हो रहा है किसीको ब्रेन हेमारेज हो रहा है, किसीको पैरालाईसीस हो रहा है, किसीको ब्रेन स्ट्रोक आ रहा है, किसी को कार्डियक अरेस्ट हो रहा है, किसी को हार्ट अटैक आ रहा है ब्वउचसपबंजपवदे बहुत है खतरनाक है ।

जब किसी व्यक्ति को मधुमेह की बीमारी होती है। इसका मतलब है वह व्यक्ति दिन भर में जितनी भी मीठी चीजें खाता है (चीनी, मिठाई, शक्कर, गुड़ आदि) वह ठीक प्रकार से नहीं पचती अर्थात उस व्यक्ति का अग्नाशय उचित मात्रा में उन चीजों से इन्सुलिन नहीं बना पाता इसलिये वह चीनी तत्व मूत्र के साथ सीधा निकलता है। इसे पेशाब में शुगर आना भी कहते हैं। जिन लोगों को अधिक चिंता, मोह, लालच, तनाव रहते हैं, उन लोगों को मधुमेह की बीमारी अधिक होती है। मधुमेह रोग में शुरू में तो भूख बहुत लगती है। लेकिन

सम्पूर्ण सेहत बिना डॉक्टर-एक सपना या हकीकत?

धीरे-धीरे भूख कम हो जाती है। शरीर सुखने लगता है, कब्ज की शिकायत रहने लगती है। अधिक पेशाब आना और पेशाब में चीनी आना शुरू हो जाती है और रोगी का वजन कम होता जाता है। शरीर में कहीं भी जखमध्वाव होने पर वह जल्दी नहीं भरता।

तो ऐसी स्थिति में हम क्या करें ? राजीव भाई की एक छोटी सी सलाह है के आप इन्सुलिन पर जादा निर्भर न करे क्योंकि यह इन्सुलिन डायबिटीज से भी जादा खतरनाक है, साइड इफेक्ट्स बहुत है ।

इस बीमारी के घरेलू उपचार निम्न लिखित हैं।

आयुर्वेद की एक दावा है जो आप घर में भी बना सकते हैं -

- 100 ग्राम मेथी का दाना
- 100 ग्राम करेले के बीज
- 150 ग्राम जामुन के बीज
- 250 ग्राम बेल के पत्ते (जो शिव जी को चढाते हैं)

इन सबको धूप में सुखाके पत्थर में पिस कर पाउडर बना कर आपस में मिला ले, यही औषधि है ।

औषधि लेने की पद्धति : सुबह नास्ता करने से एक घंटे पहले एक चम्मच गरम पानी के साथ लेले फिर शाम को खाना खाने से एक घंटे पहले लेले । तो सुबह शाम एक एक चम्मच पाउडर खाना खाने से पहले गरम पानी के साथ आपको लेना है । देड दो महीने अगर आप ये दावा ले लिया ।

ये औषधि बनाने में 20 से 25 रूपया खर्च आएगा और ये औषधि तीन महिना तक चलेगी और उतने दिनों में आपकी सुगर ठीक हो जाएगी ।

सावधानी

- सुगर के रोगी ऐसी चीजे जादा खाए जिसमें फाइबर हो रेशे जादा हो, High Fiber Low Fat Diet थी तेल वाली डायेट कम हो और फाइबर वाली जादा हो रेशेदार चीजे जादा खाए। सब्जिया में बहुत रेशे है वो खाए, डाल जो छिलके वाली हो वो खाए, मोटा अनाज जादा खाए, फल ऐसी खाए जिनमें रेशा बहुत है ।
- चीनी कभी ना खाए, डायबिटीज की बीमारी को ठीक होने में चीनी सबसे बड़ी रुकावट है। लेकिन आप गुड खा सकते हैं ।
- दूध और दूध से बनी कोई भी चीज नहीं खाना ।
- प्रेशर कुकर और अलुमिनम के बर्तन में खाना न बनाए ।
- रात का खाना सूर्यास्त के पूर्व करना होगा ।

जो डायबिटीज आनुवंशिक होते हैं वो कभी पूरी ठीक नहीं होता सिर्फ कंट्रोल होता है उनको ये दावा पूरी जिन्दगी खानी पड़ेगी पर जिनको आनुवंशिक नहीं है उनका पूरा ठीक होता है ।

सांप के काटने पर चिकित्सा

सांप काटने पर नाजा-30 हर दस मिनट में 2-2 बूंद तीन बार देना है। अगर ठीक हो रहा है, तो इसी को चालू रखना है। अगर समय ज्यादा हो गया या फर्क नहीं है तो नाजा-200 2-2 बूंद हर दस मिनट में तीन बार देना है। ठीक होने पर कोई भी दवा नहीं देना है।

अगर नाजा-200 से भी ठीक नहीं है तो नाजा 1M 2 बूंद 1/2 कप पानी में डालकर एक चम्मच हर आधे घण्टे में तीन बार पिलाना है। अगर इससे भी ठीक न हो तो नाजा 10 M की 1/2 कप पानी में एक बूंद डाल कर एक

चम्मच एक ही बार पिलाना है। जब कन्ट्रोल में आए तो गर्म पानी या मूंगदाल का उबाला हुआ पानी देना है। खाना अगर देना है तो थोड़ी मूंग दाल की खिचड़ी दे सकते हैं।

बिच्छू के काटने पर चिकित्सा

बिच्छू के काटने पर बहुत दर्द होता है जिसको बिच्छू काटता है उसके सिवा और कोई जान नहीं सकता कितना भयंकर कष्ट होता है। तो बिच्छू काटने पर एक दवा है और उसका नाम है Silicea 200 इसका लिक्विड 5 मि.ली. घर में रखें। बिच्छू काटने पर इस दवा को जीभ पर एक बूंद 10-10 मिनट के अंतर पर तीन बार देना है। बिच्छू जब काटता है तो उसका जो डंक है उसको अन्दर छोड़ देता है वो ही दर्द करता है। इस डंक को बाहर निकालना आसान काम नहीं है। डॉक्टर के पास जायेंगे वो काट कर चीरा लगायेगा फिर खींच के निकालेगा। उसमें खून भी बहेगा और तकलीफ भी होगी। ये दवाई इतनी बेहतरीन है कि आप इसके तीन डोज देंगे 10-10 मिनट पर एक-एक बूंद और आप देखेंगे कि वो डंक अपने आप निकल कर बाहर आ जायेगा। सिर्फ तीन डोज में आधे घण्टे में आप रोगी को ठीक कर सकते हैं। बहुत जबरदस्त दवाई है ये Silicea 200

यह दवाई और भी बहुत काम आती है। अगर आप सिलाई मशीन में काम करती हैं तो कभी-कभी सूई चुभ जाती है और अन्दर टूट जाती है। उस समय भी आप ये दवाई ले लीजिये। ये सूई को भी बाहर निकाल देगी। आप इस दवाई को और भी कई परिस्थितियों में ले सकते हैं जैसे कांटा लग गया हो, कांच घुस गया हो, ततैया ने काट लिया हो, मधुमक्खी ने काट लिया हो ये सब जो काटने वाले अन्दर जो छोड़ देते हैं उन सब के लिए आप इसको ले सकते हैं। बंदूक की गोली लगने पर गोली को बाहर निकालने के लिए भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। बहुत तेज दर्द निवारक है और जो कुछ अन्दर छुटा हुआ है उसको बाहर निकालने की दवाई है। बहुत सस्ती दवाई है। 5 मि.ली. सिर्फ 10 रुपये की आती है। इससे कम से कम 50 से 100 लोगों का भला हो सकता है।

पागल कुत्ता काटने

अगर घरेलु कुत्ता काटे तो कोई दिक्कत नहीं है पर पागल कुत्ता कटे तो समस्या है। सड़क वाला कुत्ता काटले तो आप जानते हैं नहीं उसको इंजेक्शन दिए हुए है या नहीं, उसने काट लिया तो आप डाक्टर के पास जायेंगे फिर वो 14 इंजेक्शन लगाएगा वो भी पेट में लगाता है, उससे बहुत दर्द होता है और खर्च भी हो जाता है कम से कम 50000 तक कई बार, गरीब आदमी के पास वो भी नहीं है।

कुत्ता कभी भी काटे, पागल से पागल कुत्ता काटे, घबराइए मत, चिंता मत करिए बिल्कुल ठीक होगा वो आदमी बस उसको एक दवा दे दीजिये। दवा का नाम है Hydrophobinum 200 और इसको 10-10 मिनट पर जिव में तिन ड्रॉप डालना है। कितना भी पागल कुत्ता काटे आप ये दवा दे दीजिये और भूल जाइये के कोई इंजेक्शन देना है। इस दवा को सूरज की धुप और रेफ्रीजिरेटर से बचाना है। रेबिस सिर्फ पागल कुत्ता काटने से ही होता है पर साधारण कुत्ता काटने से रेबिस नहीं होता। आवारा कुत्तों अगर काट दिया है तो राजीव भाई के अनुसार आप अपना मन का बहम दूर करने के लिए ये दवा दे सकते हैं लेकिन उससे कुछ नहीं होता वो हमारा मन का बहम है जिससे हम परेसान रहते हैं, और कुछ डर डॉक्टरों ने बिठा रखा है के इंजेक्शन तो लेना ही पड़ेगा। अपने शरीर में थोड़े बहुत resistance सबके पास है अगर कुत्ते के काटने से उनके लार-ग्रंथी के कुछ वायरस चले भी गये हैं तो उनको खतम करने के लिए हमारे रक्त में काफी कुछ है और वो खतम कर ही लेता है। लेकिन क्योंकि मन में भय बिठा दिया है शंका हो जाती है हमको confirm नहीं होता जब तक 20000-50000 खर्च नहीं कर लेते ये उस समय लिए राजीव भाई ने ये दवा लेने की

सम्पूर्ण सेहत बिना डॉक्टर-एक सपना या हकीकत?

बात कही है। और इसका एक एक ड्रॉप 10-10 मिनट में जीभ पर तीन बार डाल के छोड़ दीजिये । 30 मिनट में ये दवा सब काम कर देगा।

कई बार कुत्ता घर के बच्चों से साथ खेल रहा होता है और गलती से उसका कोई दाँत लग गया तो आप उस जखम में थोड़ा हल्दी लगा दीजिये पर साबुन से उस जखम को बिल्कुल मत धोये नहीं तो वो पक जायेगा हल्दी Antibiotic, Antipyretic, Antitetanatic, Antiinflammatory है।

चूना

महिलाओं के लिए गर्भाशय की बीमारियों में यह बहुत अच्छा काम करता है जैसे कि सफेद पानी आना, लाल पानी आना, माहवारी आगे-पीछे होना, गर्भाशय में गांठ बन जाना तथा अन्य सभी गर्भाशय से जुड़ी बीमारियों को चूना ठीक करता है। बाल टूटना, चेहरे के मुहांसे, हड्डी के टूटने पर, जोड़ों के दर्द में, हीमोग्लोबिन का प्रतिशत कम हो तो, हैपेटाईटिस A, B, C, D, E, स्मरण शक्ति कम हो तो, हाथी पैर हो गया तो इन सब बीमारियों में चूना दही में अथवा पानी में मिला कर लेना चाहिये। पुरुषों में शुक्राणु बढ़ाने के लिए चूना गन्ने या संतरे या मौसम्मी के रस में लेना चाहिए। 14 साल से कम आयु के बच्चे जिनका कद छोटा हो, महिलायें जिनमें वक्ष का कम विकास हो, दांतों की किसी भी तरह की समस्या, इन सबमें चूने का सेवन करना लाभदायक है।

मात्रा: - एक गेहूँ के दाने के बराबर दिन में एक बार

जोड़ों का दर्द यदि बहुत पुराना हो भले 20 साल या 30 साल पुराना हो या जब डॉक्टर कहे कि घुटने बदलने पड़ेंगे उस समय चूना काम नहीं करेगा। उसको चूने की जगह हारश्रृंगार के पत्तों का काढ़ा देना पड़ेगा। हारश्रृंगार को पारीजात भी कहते हैं। इसमें सफेद रंग के छोटे फूल होते हैं जिनकी नारंगी रंग की डंडी होती है। इसके फूलों में बहुत तेज खूशबू होती है। इस पेड़ के 7-8 पत्तों को बारीक पीस कर चटनी जैसा बनाकर एक गिलास पानी में उबालें, आधा गिलास रह जाने पर सुबह खाली पेट पी लें। तीन महीने में यह समस्या बिल्कुल ठीक हो जायेगी। किसी भी तरह का बुखार होने की स्थिति में भी यह काढ़ा काम करता है। उस स्थिति में 7-8 दिन ही देना है।

नोट: - पथरी की बीमारी के मरीज चूना नहीं ले सकते।

पथरी की चिकित्सा

आयुर्वेदिक ईलाज: - पाखांडभेद नाम का एक पौधा होता है। उसे पत्थरचटा भी कुछ लोग बोलते हैं। उसके पत्तों को पानी में उबाल कर काढ़ा बना लें। मात्र 7 से 15 दिन में पूरी पथरी खत्म और कई बार तो इससे भी जल्दी खत्म हो जाती है।

होम्योपैथी ईलाज: - होम्योपैथी में एक दवा है और वो आपको किसी भी होम्योपैथी की दुकान पर मिल जायेगी। उसका नाम है BERBERIS VULGARIS ये दवा के आगे लिखना है MOTHER TINCER, ये उसकी पोटेंसी (ताकत) है।

वो दुकान वाला समझ जायेगा। यह दवा होम्योपैथी की दुकान से ले आइये।

(ये BERBERIS VULGARIS दवा भी पत्थरचटा नाम के पौधे से बनी है बस फर्क इतना है ये पत्थरचटा पौधे का Botanical name BERBERIS VULGARIS ही है।)

सम्पूर्ण सेहत बिना डॉक्टर-एक सपना या हकीकत?

अब इस दवा की 10-15 बूंदों को एक चौथाई (1/4) कप गनगुने पानी में मिलाकर दिन में चार बार (सुबह, दोपहर, शाम और रात) लेना है। चार बार अधिक से अधिक और कम से कम तीन बार। इसको लगातार एक से डेढ़ महीने तक लेना है कभी-कभी दो महीने भी लग जाते हैं।

इससे जितने भी Stone है, कहीं भी हो पित्ताशय (Gall Bladder) में हो या फिर किडनी में हो, या यूनियन के आसपास हो, या फिर मूत्रपिंड में हो। वो सभी पथरी को तोड़कर पिघलाकर ये निकाल देता है।

99% केस में डेढ़ से दो महीने में ही सब टूट कर निकाल देता है कभी-कभी हो सकता है तीन महीने में लेना पड़े। आप तीन महीने बाद सोनोग्राफी करवा लीजिए आपको पता चल जायेगा कितना टूट गया है कितना रह गया है। अगर रह गया है तो थोड़े दिन और ले लीजिए। इस दवा का कोई साइड इफेक्ट नहीं है।

ये तो हुआ जब पथरी टूट के निकल गया अब दोबारा भविष्य में यह ना बने उसके लिए क्या? क्योंकि जिन लोगों को पथरी होती है निकलने के बाद भी बार-बार हो जाती है। पथरी टूट के निकल जाये और दुबारा कभी न हो इसके लिए होम्योपैथी में एक दवा है CHINA 1000

इस दवा को एक ही दिन सुबह-दोपहर-शाम दो-दो बूंद सीधे जीभ पर डाल दें भविष्य में कभी पथरी नहीं बनेगी। मगर यह दवा तब काम करेगी जब पथरी न हो।

गठिया की चिकित्सा

दोनों तरह के गठिया (Osteoarthritis और Rheumatoid arthritis) में आप एक दवा का प्रयोग करें जिसका नाम है चूना, वह चूना जो आप पान में खाते हो। गेहूँ के दाने के बराबर चूना रोज सुबह खाली पेट एक कप दही में मिलाकर खाना चाहिए, नहीं तो दाल में मिलाकर, नहीं तो पानी में मिलाकर पीना लगातार तीन महीने तक, तो गठिया ठीक हो जाती है। ध्यान रहे पानी पीने के समय हमेशा बैठ के घूँट-घूँट कर के पीना चाहिए नहीं तो बीमारी ठीक नहीं होगी। अगर आपके हाथ या पैर की हड्डी में कट-कट की आवाज आती हो तो वो भी चूने से ठीक हो जायेगा।

दोनों तरह के गठिया के लिए और एक अच्छी दवा है वो है छोटा मेथी दाना। एक छोटा चम्मच मेथी का दाना एक कांच के गिलास में गर्म पानी लेकर उसमें डालना, फिर उसको रात भर भिगोकर रखना। सवेरे उठ कर पानी घूँट-घूँट करके पीना और मेथी का दाना चबाकर-चबाकर खाना। तीन महीने तक लेने से गठिया ठीक हो जाता है। ध्यान रहे पानी पीने के समय हमेशा बैठ कर पीना चाहिए नहीं तो बीमारी ठीक नहीं होगी।

जोड़ों का दर्द यदि बहुत पुराना हो भले 20 साल या 30 साल पुराना हो या जब डॉक्टर कहे कि घुटने बदलने पड़ेंगे उस समय चूना काम नहीं करेगा। उसको चूने की जगह हारश्रृंगार के पत्तों का काढ़ा देना पड़ेगा। हारश्रृंगार को पारीजात भी कहते हैं। इसमें सफेद रंग के छोटे फूल होते हैं जिनकी नारंगी रंग की डंडी होती है। इसके फूलों में बहुत तेज खूशबू होती है। इस पेड़ के 7-8 पत्तों को बारीक पीस कर चटनी जैसा बनाकर एक गिलास पानी में उबालें, आधा गिलास रह जाने पर सुबह खाली पेट पी लें। तीन महीने में यह समस्या बिल्कुल ठीक हो जायेगी। किसी भी तरह का बुखार होने की स्थिति में भी यह काढ़ा काम करता है। उस स्थिति में 7-8 दिन ही देना है। ये औषधि बहुत खास (Exclusive) है और बहुत Strong औषधि है। इसलिए अकेली ही देना चाहिये, इसके साथ कोई भी दूसरी दवा न दे नहीं तो तकलीफ होगी। ध्यान रहे पानी पीने के समय हमेशा बैठ के घूँट-घूँट कर पीना चाहिये नहीं तो ठीक नहीं होंगे।

चोट लगने लेकिन खून न बहने पर

शरीर के किसी भी भाग में बिना रक्त निकले चोट लगने या मुड़ जाने पर या मार लगने, गिरने पर Arnica 200 की 2-2 बूंद हर आधा घंटे में तीन बार देना है।

अगर सूजन है या मार ज्यादा लगी है और अगर बेहोशी है तो Arnica 1M एक बूंद हर एक घण्टे के अंतर में तीन बार देना है। उससे भी ज्यादा गंभीर स्थिति होने पर Arnica 10M एक बूंद एक ही बार देनी है।

अगर हड्डी टूट गई है तो अगले दिन एक दाना गेंहूँ के बराबर चूना दहीं में मिलाकर दिन में एक बार 15 से 20 दिन तक देना है। हाथ पैर की हड्डी टूटने पर Arnica 1M ही देना है।

नोट: - पथरी के मरीज को चूना नहीं लेना है।

चोट लगने और खून बहने पर इसकी चिकित्सा

शरीर पर चोट लगने से खून बहने पर होम्योपैथी की दवा Hypercum 200 2-2 बूंद हर आधे घण्टे से तीन बार, अगर चोट ज्यादा है और खून बह रहा है तो Hypercum 1M 1-1 बूंद हर आधे घण्टे में तीन बार देना है। अगर सिर पर बहुत चोट हो और सिर से बहुत खून बह रहा हो तो Hypercum 10M, 50M, 1 CM ताकत की दवाई देना होगा।

बहुत गंभीर चोट

कुछ चोट लग जाती है, और कुछ छोटे बहुत गंभीर हो जाती है। जैसे कोई डाईबेटिक पेशेंट है चोट लग गयी तो उसका सारा दुनिया जहां एक ही जगह है, क्योंकि जल्दी ठीक ही नहीं होता है। और उसके लिए कितना भी चेष्टा करे करे डॉक्टर हर बार उसको सफलता नहीं मिलता है। और अंत में वो चोट धीरे धीरे गैंग्रीन (अंग का सड़ जाना) में कन्वर्ट हो जाती है। और फिर काटना पड़ता है, उतने हिस्से को शरीर से निकालना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में एक औषधि है जो गैंग्रीन को भी ठीक करती है और Osteomyelitis (अस्थिमज्जा का प्रदाह) को भी ठीक करती है।

गैंग्रीन माने अंग का सड़ जाना, जहाँ पर नए कोशिका विकसित नहीं होते। न तो मांस में और न ही हड्डी में और सब पुराने कोशिका मरते चले जाते हैं। इसी का एक छोटा भाई है Osteomyelitis इसमें भी कोशिका कभी पुनर्जीवित नहीं होते, जिस हिस्से में होता है उहाँ बहुत बड़ा घाव हो जाता है और वो ऐसा सड़ता है के डॉक्टर कहता है की इसको काट के ही निकलना है और कोई दूसरा उपाय नहीं है।। ऐसे परिस्थिति में जहां शरीर का कोई अंग काटना पड़ जाता हो या पड़ने की संभावना हो, घाव बहुत हो गया हो उसके लिए आप एक औषधि अपने घर में तैयार कर सकते है।

औषधि है देशी गाय का मूत्र (सूती के आट परत कपडो में चन कर), हल्दी और गेंदे का फूल। गेंदे के फूल की पिला या नारंगी पंखरियाँ निकलना है, फिर उसमे हल्दी डालकर गाय मूत्र डालकर उसकी चटनी बनानी है। अब चोट कितना बड़ा है उसकी साइज के हिसाब से गेंदे के फूल की संख्या तै होगी, माने चोट छोटे एरिया में है तो एक फूल, बड़े है तो दो, तीन, चार अंदाज से लेना है। इसकी चटनी बनाकर इस चटनी को लगाना है जहाँ पर भी बाहर से खुली हुई चोट है जिससे खून निकल रहा है और ठीक नहीं हो रहा। कितनी भी दवा खा रहे है पर ठीक नहीं हो रहा, ठीक

सम्पूर्ण सेहत बिना डॉक्टर-एक सपना या हकीकत?

न होने का एक कारण तो है डायबिटीज दूसरा कोई जिनगीत कारण भी हो सकते हैं। इसको दिन में कम से कम दो बार लगाना है जैसे सुबह लगाकर उसके ऊपर रुई पट्टी बांध दीजिये ताकि उसका असर बाँड़ी पर रहेय और शाम को जब दुबारा लगायेंगे तो पहले वाला धोना पड़ेगा टी इसको गोमूत्र से ही धोना है डेटोल जैसो का प्रयोग मत करिए, गाय के मूत्र को डेटोल की तरह प्रयोग करे। धोने के बाद फिर से चटनी लगा दे। फिर अगले दिन सुबह कर दीजिये।

यह इतना प्रभावशाली है के आप सोच नहीं सकते, चमत्कार जैसा लगेगा। इस औषधि को हमेशा ताजा बनाकर लगाना है। किसी का भी जखम किसी भी औषधि से ठीक नहीं हो रहा है तो ये लगाइए। जो सोराइसिस गिला है जिसमे खून भी निकलता है, पस भी निकलता है उसको यह औषधि पूर्णरूप से ठीक कर देता है। अकसर यह एक्सीडेंट के केसेस में खूब प्रयोग होता है क्योंकि ये लगाते ही खून बांध हो जाता है। आपरेशन का कोई भी घाव के लिए भी यह सबसे अच्छा औषधि है। गिला एक्जीमा में यह औषधि बहुत काम करता है, जले हुए जखम में भी काम करता है।

CALENDULA OFFICINALIS (MOTHER TINCER)

शरीर पर किसी भी तरह का घाव होने पर या चोट लग जाने पर पहले गोमूत्र या गर्म पानी से धोना है। उसके गेंदे के फूल की पंखुड़ियां, हल्दी और गोमूत्र की चटनी बनाकर लगानी है बाद Calendula लगा कर गेंदे के फूल (पंखुड़ियां) चटनी करके लगाना है।

NUX VOMICA

डायरिया, उल्टी या दस्त होने पर Nux Vomica 200 2-2 बूंद दिन में तीन बार सुबह, दोपहर व शाम को दो तीन दिन चालू रखना है।

हर्निया के लिए Nux Vomica 1M 1-1 बूंद दिन में तीन बार प्रत्येक एक-एक घण्टे से फिर वापिस 15 दिन या फिर 15 दिन बाद तीन महीने तक।

घात जाने पर Nux Vomica 1M सुबह खाली पेट प्रत्येक 1-1 घण्टे में तीन बार देना है।

अपेन्डेक्स (Appendix) के लिए - Nux Vomica 200 रात के भोजन के एक घण्टे बाद 2 बूंद फिर तीन दिन बाद 2 बूंद (दस बार तक ले सकते हैं)

स्वप्न दोष के लिए - Nux Vomica 200 रात को सोते समय 2 बूंद हर तीन दिन बाद फिर से ले सकते हैं। रोज नहीं।

पीलिया

हेपेटाईटिस A, B, C, D, E के ईलाज

1. गेंहूँ के दाने के बराबर चूना गन्ने के रस के साथ पान में लगाकर दिन में एक बार 10 से 12 दिन तक लेना है।
2. पीलिया होने पर Nux Vomica – 30 2-2 बूंद दिन में तीन बार 10 से 12 दिन तक लेना है।
3. BERBERIS VULGARIS Mother Tincer की 10-15 बूंदों को एक चौथाई (1/4) कप गुणगुने पानी में मिलाकर दिन में चार बार (सुबह, दोपहर, शाम और रात) को लेना है।

बवासीर, फिस्टूला या भगन्दर होने पर

एक केले को बीच से चीरा लगाकर चना बराबर कपूर बीच में रख दें फिर इसे खाए इससे बवासीर एकदम ठीक हो जाती है साथ में देशी गाय का मूत्र भी पीयें।

सम्पूर्ण सेहत बिना डॉक्टर-एक सपना या हकीकत?

Nux Vomica 30 - रोज रात को एक बूंद

Sulphar 200 - हफ्ते में एक दिन सुबह-दोपहर-शाम एक-एक बूंद दिन में तीन बार

नोट: - अस्थमा के मरीज को कभी भी सल्फर नहीं देना।

नसों में जकड़न और पक्षाघात

नसों में जकड़न और पक्षाघात या Paralysis में एक दवा का नाम है Rhustox - 30 जिस दिन पक्षाघात आता है रोगी को 15-15 मिनट पर तीन बार दो-दो बूंद मुंह में दे और इसी Rhustox - 30 को लगातार करते हुए रोज सुबह, दोपहर, शाम दें साथ में एक और दवा है Causticum - 1M जिस दिन Rhustox - 30 दिया दूसरे दिन Causticum - 1M की दो-दो बूंद तीन बार दें और Causticum - 1M को Rhustox - 30 के आधे घंटे बाद देना है। ये Rhustox - 30 रोज की दवाई है। पर Causticum - 1M हफ्ते में एक दिन दो-दो बूंद तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) देनी चाहिए। ऐसे करके पक्षाघात के रोगी को दवा देंगे तो कोई एक महीने में ठीक हो जायेगा कोई 15-20 दिन में ठीक हो जायेगा किसी को 45 दिन लगेंगे और ज्यादातर दो महीने से ज्यादा नहीं लगेंगे ठीक होने में। अगर किसी को Paralysis आने के 15 दिन या एक महीने बाद से दवा दिया जाये तो वो रोगी तीन महीने में ठीक हो जाते हैं, तीन महीने से ज्यादा समय नहीं लगता।

कैंसर

कैंसर बहुत तेजी से बढ़ रहा है इस देश में। हर साल बीस लाख लोग कैंसर से मर रहे हैं और हर साल नए केस आ रहे हैं और सभी डॉक्टर्स हाथ-पैर डाल चुके हैं।

राजीव भाई की एक छोटी सी विनती है याद रखना कि.....“कैंसर के मरीज को कैंसर से मृत्यु नहीं होती है बल्कि जो ईलाज कैंसर के लिए दिया जाता है उससे मृत्यु होती है।” मतलब कैंसर से ज्यादा खतरनाक कैंसर का ईलाज है। ईलाज कैसा है आप सभी जानते हैं..... कैम्पियोथैरेपी दे दिया, रेडियोथैरेपी दे दिया, कोबाल्ट-थैरेपी दे दिया।

इसमें क्या होता है कि शरीर की जो प्रतिरक्षक शक्ति है वो बिल्कुल खत्म हो जाती है। जब कैम्पियोथैरेपी दी जाती है ये बोल कर कि हम कैंसर के सेल को मारना चाहते हैं तो अच्छे सेल भी उसी के साथ मर जाते हैं। राजीव भाई के पास कोई भी रोगी जो कैम्पियोथैरेपी लेने के बाद वे उनको बचा नहीं पाए। लेकिन इसका उल्टा भी रिकार्ड है.....राजीव भाई के पास बिना कैम्पियोथैरेपी लिए हुए कोई भी रोगी आया दूसरी या तीसरी स्टेज तक वो एक भी नहीं मर पाया।

मतलब क्या है ईलाज लेने के बाद जो खर्च आपने कर दिया वो तो मर ही गया और रोगी भी आपके हाथ से गया। डॉक्टर आपको भूल भूलैया में रखता है अभी 6 महीने में ठीक हो जायेगा 8 महीने में ठीक हो जायेगा लेकिन अंत में वो जाता ही है। आपके घर परिवार में अगर किसी को कैंसर हो जाये तो ज्यादा खर्चा मत करिए क्योंकि जो खर्च आप करेंगे उससे मरीज का तो भला नहीं होगा बल्कि उसको इतना कष्ट होता है कि आप कल्पना नहीं कर सकते।

उसको जो इंजेक्शन दिए जाते हैं जो गोली खिलाई जाती है उसको जो कैम्पियोथैरेपी दी जाती है उससे सारे बाल उड़ जाते हैं, भौंहों के बाल उड़ जाते हैं, चेहरा इतना डरावना लगता है कि पहचान में नहीं आता ये अपना ही आदमी है। इतना कष्ट क्यों दे रहे हो उसको ? सिर्फ इसलिए कि आपको एक अहंकार है कि आपके पास बहुत पैसा है तो ईलाज करा के ही मानूंगा। आप अपनी आस पड़ोस की बातें ज्यादा मत सुनिए क्योंकि आजकल हमारे रिश्तेदार बहुत भावनात्मक शोषण

सम्पूर्ण सेहत बिना डॉक्टर-एक सपना या हकीकत?

करते हैं। घर में किसी को गंभीर बीमारी हो गयी तो जो रिश्तेदार है वो पहले आ के कहते हैं अरे ऑल इंडिया नहीं ले जा रहे हो ? पी.जी.आई. नहीं ले जा रहे हो ? टाटा इंस्टीट्यूट मुंबई नहीं ले जा रहे हो ? आप कहोगे नहीं ले जा रहा हूँअरे तुम बड़े कंजूस आदमी हो बाप के लिए इतना भी नहीं कर सकते माँ के लिए इतना नहीं कर सकते। ये बहुत खतरनाक लोग होते हैं। हो सकता है कई बार वो मासूमियत के साथ कहते हो, उनका मकसद खराब नहीं होता हो लेकिन उनको जानकारी कुछ भी नहीं है, बिना जानकारी के वो सलाह पर सलाह देते जाते हैं और कई बार अच्छा खासा पढ़ा लिखा आदमी फंसता है उसी में.....रोगी को भी गंवाता है पैसा भी जाता है।

कैंसर के लिए क्या करे ? हमारे घर में कैंसर के लिए एक बहुत अच्छी दवा है.....अब डॉक्टरों ने मान लिया है पहले तो वे मानते भी नहीं थे उसका नाम है “हल्दी”। हल्दी कैंसर ठीक करने की ताकत रखती है। हल्दी में एक कैमिकल है उसका नाम है कर्कुमिन और ये ही कैंसर सेलों को मार सकता है बाकि कोई कैमिकल बना नहीं दुनिया में और ये भी आदमी ने नहीं भगवान ने बनाया है। हल्दी जैसा ही कर्कुमिन और एक चीस में है वो है देशी गाय के मूत्र में। गोमूत्र माने देशी गाय के शरीर से निकला हुआ सीधा साधा मूत्र जिसे सूती के आठ परत की कपड़ों से छान कर लिया गया हो। तो देशी गाय का मूत्र अगर आपको मिल जाये और हल्दी आपके पास हो तो आप कैंसर का ईलाज आसानी से कर पायेंगे। अब देशी गाय का मूत्र आधा कप और आधा चम्मच हल्दी तथा आधा चम्मच पुनर्नवा चूर्ण (पाउडर) तीनों को मिला के गरम करना जिससे उबाल आ जाये फिर उसको ठंडा कर लेना। कमरे के तापमान में आने के बाद रोगी को चाय की तरह पिलाना है.....चुस्कियां ले ले कर सिप कर करके पियें, इससे अच्छा नतीजा आयेंगा।

इस दवा में सिर्फ देशी गाय का मूत्र ही काम में आता है जर्सी का मूत्र कुछ काम नहीं आता। और दो देशी गाय काले रंग का हो उसका मूत्र सबसे अच्छा परिणाम देता है इन सब में। इस दवा को (देशी गाय की मूत्र, हल्दी, पुनर्नवा) सही अनुपात में मिला के उबाल के ठंडा करके कांच के पात्र में स्टोर करके रखिए पर बोतल को कभी फ्रिज में मत रखिये। ये दवा कैंसर के सेकंड स्टेज में और कभी-कभी थर्ड स्टेज में भी बहुत अच्छे परिणाम देती है। जब स्टेज थर्ड क्रास करके चौथी स्टेज में पहुंच जाये तब परिणाम में सफलता की प्रतिशतता थोड़ी कम हो जाती है और अगर आपने किसी रोगी को कैम्प्योथैरेपी दे दिया तो फिर इसका कोई असर नहीं आता। कितना भी पिला दो कोई परिणाम नहीं आता। आप अगर किसी रोगी को ये दवा दे रहे है तो उसे पूछ लीजिये जान लीजिये कहीं कैम्प्योथैरेपी शुरू तो नहीं हो गयी ? अगर शुरू हो गयी है तो आप उसमें हाथ मत डालिए, जैसा डॉक्टर करता है करने दीजिये, आप भगवान से प्रार्थना कीजिये उसके लिए....इतना ही करें। और अगर कैम्प्योथैरेपी शुरू नहीं हुई है और उसने कोई ऐलोपैथी ईलाज शुरू नहीं किया तो आप देखेंगे इसके चमत्कारिक परिणाम आते है। ये सारी दवाई काम करती है शरीर की प्रतिकारक शक्ति पर। हमारी जो जीवनी शक्ति है (Vitality) उसका सुधार करती है। हल्दी को छोड़कर गोमूत्र और पुनर्नवा शरीर की जीवनी शक्ति को और ताकतवर बनाती है और जीवनी शक्ति के ताकतवर होने के बाद कैंसर के सेलों को खत्म करती है।

ये तो बात हुई कैंसर की चिकित्सा की, पर जिंदगी में कैंसर आए ही ना ये और भी अच्छा है। तो जिंदगी में आपको कभी कैंसर न हो उसके लिए एक बात याद रखिए आप खाना बनाने में जो तेल इस्तेमाल करते हैं वो रिफाईंड तेल या डालडा न हो। ये देख लीजिए दूसरा जो भी खाना खा रहे हैं उसमें रेशेदार भोजन का हिस्सा ज्यादा हो जैसे छिलके वाली दालें, छिलके वाली सब्जियां, चावल भी छिलके वाला, अनाज भी छिलके वाला तो आप निश्चिन्त रहें आपको कभी कैंसर नहीं होगा।

और कैंसर के सबसे बड़े कारणों में से दो तीन कारण है रसायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं वाला अनाज, तम्बाकू, बीड़ी सिगरेट, गुटका आदि जैसी चीजों का प्रयोग।

सम्पूर्ण सेहत बिना डॉक्टर—एक सपना या हकीकत?

कैंसर के बारे में सारी दुनिया एक ही बात कहती हैं चाहे वो डॉक्टर हो विशेषज्ञ हो या वैज्ञानिक हो कि इससे बचाव ही इसका उपाय है। महिलाओं में आजकल बहुत कैंसर हो रहे हैं गर्भाशय के, स्तन के और ये काफी तेजी से बढ़ रहे हैं। पहले गांठ (Tumour) होती है फिर वो कैंसर में बदल जाता है। माताओं और बहनों को क्या करना है कि जिंदगी में कभी Tumour ही न आए। आप के लिए सबसे अच्छा बचाव का काम है जैसे ही आपके शरीर के किसी भी हिस्से में किसी रसौली या गांठ (Unwanted Growth) का पता चलें तो सावधान हो जाईये। हालांकि सभी गांठ या रसौली कैंसर नहीं होती है। 2 या 3 प्रतिशत ही कैंसर में बदलती हैं। लेकिन आप के पास इस रसौली या गांठ को ठीक करने की दुनिया की सबसे अच्छी दवा है “चूना”। चूना वही जो पान में खाया जाता है। पान वाले की दुकान से चूना ले लाईये यह चूना एक गेहूँ के दाने के बराबर रोज खाईये, दही में मिला कर, लस्सी में मिला कर, छाछ या मट्ठा में मिला कर, दाल में मिलाकर, सब्जी में मिलाकर खा लीजिए। अधिक से अधिक तीन महीने तक। पर ध्यान रहे पथरी के रोगी चूना नहीं खा सकते।